हिन्दी दिवस विशेषाँक

द ग्लोबल टाइम्स

सितम्बर 9, 2024

धरती का सर्वेक्षण

कुदरत का मनुष्य पर बहुत बड़ा कर्ज है

मायरा शादाब
ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
वसुंधरा सैक्टर 6, कक्षा 10 ए

पर्यावरण सदा-सर्वदा मानव जीवन का रक्षक रहा है। अपनी आम ज़िंदगी में इंसान तमाम सुख-सुविधाओं के लिए प्रकृति पर आश्रित रहता है। वास्तव में मनुष्य का अस्तित्व ही पर्यावरण पर निर्भर करता है, साँस लेने के लिए ऑक्सीजन, पीने के लिए पानी या फसल उगाने के लिए ज़मीन। कुदरत का मनुष्य पर बहुत बड़ा कर्ज़ है, जिसे आने वाली पीढ़ी को भी चुकाना पड़ेगा। जब मनुष्य पृथ्वी से इतना कुछ प्राप्त करता है तो उसका भी दायित्व बनता है कि वह उसकी कद्र करना भी सीखे। मानव की सबसे बड़ी भूल है, हर प्राकृतिक संसाधन को अनुदत्त समझना और उसका इस्तेमाल ऐसे करना जैसे वो असीमित हो। अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मानव किसी भी हद तक जा सकता है। यह बात उचित नहीं है कि अपने भोग-विलास की पूर्णता के लिए हम कुदरत को कष्ट भुगतने दें। मानव जाति से पहले पृथ्वी पर पर्यावरण और पशु-पक्षियों का हक़ है, जिसे हम इंसान छीन नहीं सकते। अतः धरती का सर्वेक्षण हमारी ज़िम्मेदारी ही नहीं, हमारा कर्त्तव्य है। पृथ्वी को बचाने की इस मुहिम में केवल कुछ सौ या हज़ार लोग ही नहीं बल्कि समस्त विश्व का साथ आवश्यक है।

अनेक उद्योगों एवं वाहनों के कारण भारत ही नहीं, परन्तु दुनिया के तमाम शहरों को प्रदूषण का सामना करना पड़ रहा है। इसकी वजह है गाड़ियों से निकलने वाली हानिकारक गैस जो वातावरण में घुलकर कई बीमारियों, जैसे- अस्थमा और ब्रोंकाइटिस को जन्म देती है। यह ठीक है कि उद्योगों के विकास को हम रोक तो नहीं सकते परंतु वातावरण की शुद्धि के लिए कुछ कदम तो उठा ही सकते हैं। उदाहरण के लिए, रोड पर गाड़ियों की संख्या को घटाने के लिये कार पूलिंग करना और पेड़-पौधे लगाना जिससे हवा की शुद्धि हो सके। कोरोना काल से जूझते वक्त में रोड पर कम गाड़ियों की वजह से प्रदूषण दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता जैसे शहरों में घटा था। इससे सिद्ध होता है कि मानव गतिविधि ही प्रदूषण और वनों की कटाई का भी कारण है।

बदलते वक्त और तकनीकी ज्ञान के साथ, मानव जाति की ज़रूरतों में अत्यन्त बदलाव और वृद्धि भी आईजो किसी न किसी तरीके से पर्यावरण के लिए हानिकारक है। देश की प्रमुख नदियों में से एक- गंगा नदी जिसने करोड़ों भारतवासियों की श्रद्धा को स्वीकारा है, अब स्वच्छ न रही है। कई त्योहारों के नाम पर गंगा नदी में कचरा डाल दिया जाता है जिसकी वजह से गंगा प्रदूषित हो रही है। हम भारतवासियों की श्रद्धा का तब तक कोई मोल नहीं है जब तक हम अपनी संस्कृति को आने वाली पीढ़ी के लिए सुरक्षित न रख सकें। अपने देश के प्रति हर नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह अपने देश के प्रति अगर कुछ न कर सके तो कुछ बिगाड़े भी तो नहीं। नदियों की रक्षा करना, उनमें रह रहे जीव-जन्तुओं की भी रक्षा करना। जैसे- गंगा डाल्फिन, जिसे भारत का जलीय जानवर, वर्ष 2008 में घोषित किया गया था।

जब बात आती है पशु-पक्षियों की दुर्लभ प्रजातियों को बचाने की तब विश्वभर में कई लोगों ने उचित कदम उठाए हैं। जैसे मेनका गाँधी जो कि एक मंत्री के रूप में भी काफी मुद्दों पर अपनी आवाज़ उठाती रही हैं। गढ़वाल इलाके में वनों की कटाई के खिलाफ मोर्चा निकालने वाले स्वर्गीय सुंदरलाल बहुगुणा जी के चिपको आंदोलन की वजह से उत्तराखंड में कई पेड़ों को काटने से बचाया जा सका है। एक और संरक्षणवादी हैं- मेधा पाटकर जिन्होंने गुजरात में बन रहे सरदार सरोवर बाँध के किनारे बसे गाँव को बचाने के लिए 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' किया था। अगर कोशिश की जाए तो कठिन से कठिन बाधा भी अवसर के रूप में बदलाव करने का हमें मौका देती है जो किसी को भी नहीं खोना चाहिए। जी दी

हिन्दी: शब्दकोश से संयुक्त राष्ट्र तक

कुछ समय पहले समाचार पत्रों में मैंने पढ़ा कि हिन्दी के क़रीब 70 नए शब्द ऑक्सफ़ोर्ड अँग्रेजी शब्दकोश में शामिल किये गए हैं । अँग्रेज़ी में पहले से ही सम्मिलित 900 शब्दों को मिलाकर अब करीब हिन्दी के 1000 शब्द हो गए हैं ऑक्सफ़ोर्ड अँग्रेज़ी शब्दकोश में । 17वीं सदी में बंगला, चौकीदार, जंगल, इत्यादि शब्दों को अँग्रेज़ी शब्दकोश में सम्मिलित करने से शुरू हुई प्रक्रिया, 21वीं सदी में जुगाड़ जैसे शब्द तक निरंतर जारी है । बल्कि 21वीं सदी के वैश्वीकरण ने तो इस प्रक्रिया को और भी तेज़ कर दिया है।

डॉ. (श्रीमती) अमिता चौहान
चेयरपर्सन
ऐमिटी ग्रुप ऑफ स्कूल्स

आज हम इस बाबत चिंतित होते हैं कि हिन्दी का अस्तित्व ख़तरे में है, यह एक कटु सत्य भी है, किन्तु इसका दूसरा पहलू यह भी है कि हिन्दी के 1000 से भी अधिक शब्द आज विश्व स्तर पर बोले, समझे और लिखे जाते हैं। शैम्पू, चाय इत्यादि आम भाषा में बोले जाने वाले हिन्दी के कुछ लोकप्रिय शब्दों के उदहारण हैं । एक बच्चा जब साग-सब्जी नहीं खाता तो माँ उसे किसी रुचिकर भोजन के रूप में बनाकर खिला देती है। कुछ इसी प्रकार हिन्दी शब्दों का अँग्रेज़ी शब्दकोश में सम्मिलित होना 21 वीं सदी में युवाओं के बीच हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ाने का कार्य करता है।

विश्व में हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ाने हेतु कई स्तरों पर कोशिशें की गई हैं, जैसे संयुक्त राष्ट्र ने हिन्दी में भी अपने सोशल मीडिया पर पोस्ट्स डालनी शुरू की हैं। इन पर हर वर्ष 1000 पोस्ट्स डाली जातीं हैं और फेसबुक तथा इंस्ट्राग्राम को 44000 लोग फॉलो करते हैं । यूनेस्को ने 2022 में भारत के यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों की सभी वेबसाइटों पर हिन्दी में विवरण लिखने को सहमति दी। गर्व की बात है कि 10, जनवरी 2023 को यूनेस्को सहित विश्व के अनेकों देशों ने विश्व हिन्दी दिवस मनाया। शब्दकोश से लेकर संयुक्त राष्ट्र तक, 21 वीं सदी में हिन्दी शब्दों का प्रचलन निश्चित ही एक आशा की किरण है। भाषाविदों की मानें तो भविष्य में इंग्लिश से भी ज़्यादा हिंग्लिश की लोकप्रियता बढ़ेगी, यानि सम्मिलित रूप में ही सही हिन्दी का अस्तित्व विश्व-पटल पर बना रहेगा। और यही आज के शिक्षकों के लिए स्वर्णिम अवसर है कि वे अपने विद्यार्थियों से हिंग्लिश के बारे में चर्चा करके बच्चों को हिंन्दी की आधुनिकता एवं प्रासंगिकता के बारे में बताएँ। जब वे समझेंगे कि अँग्रेज़ी को भी प्रासंगिक रहने के लिए हिन्दी और अन्य भाषाओं का सहारा लेना पड़ता है तो वे हिन्दी से लगाव और अपनापन महसूस करेंगे और स्वयं ही हिन्दी को पढ़ने व समझने जानने की आतुरता दिखाएँगे।

सोशल मीडिया और हम

सोशल मीडिया के इस्तेमाल के प्रति लोगों को जगाना होगा

आराधना शुक्ला, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
जगदीशपुर, कक्षा 9 बी

सोशल मीडिया एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जहाँ लोग फेसबुक, स्नैपचैट के ज़रिए एक-दूसरे से जुड़े रहते है। सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। शायद उतना महत्त्वपूर्ण जितना कि कोई नहीं, कुछ नहीं। या यों कहें कि हम सभी सोशल मीडिया के शिकार बन चुके हैं। सोशल मीडिया के बहुत से फायदे तथा नुकसान भी है। जैसे- बच्चे सबसे ज्यादा फायदा उठाते है अपने प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए। इसे हम अपनी सभी समस्याओं का समाधान कुंजी के रूप में अपने साथ पाते हैं। दैनिक जीवन के सभी पहलुओं से लेकर अंतरिक्ष भेदने तक, सागर की अथाह गहराइयों से लेकर पर्वत की चोटियों तक, हर जगह हम इसका सहारा लेते हैं। यात्राओं में गूगल मैप हमारी बहुत मदद करता है, इत्यादि।

लेकिन हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। यह बात सोशल मीडिया पर भी लागू होती है। एक ओर जहाँ इसके कुछ फायदे हैं तो दूसरी ओर इसके नुकसान भी है। उदाहरण के लिए बच्चे अपना उत्तर गूगल से देख तो लेते हैं, पर ऐसा लगातार करने से उनका मानसिक विकास बाधित हो जाता है। यदि हम गूगल मैप की बात करें तो कई बार गूगल मैप हमें गलत जानकारी भी दे देता है। यदि रास्ते में कोई समस्या है या फिर सड़क टूटी हुई हो तो यह जानकारी गूगल हमें नहीं देता है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग का दुष्प्रभाव हमारी मानसिक और बौद्धिक क्षमता, चिंतन व कल्पना शक्ति पर भी पड़ता है।

हम सभी को सोशल मीडिया की ऐसी लत लगी है कि हमारे

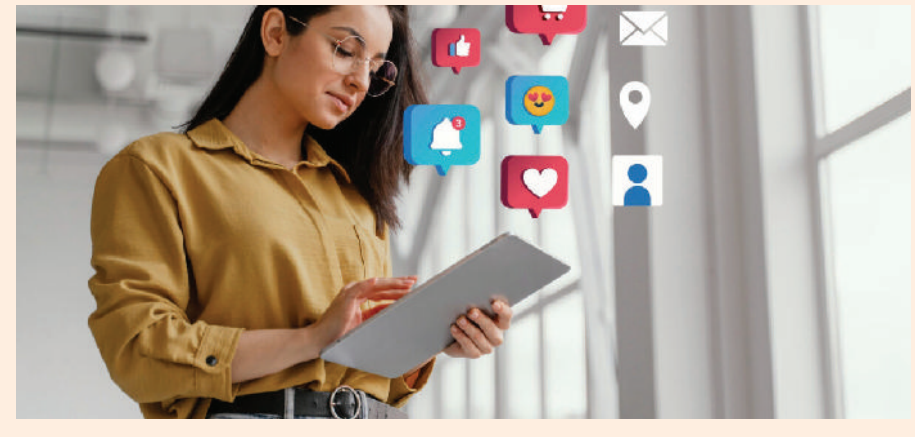

दिन की शुरुआत ही सुबह उठते फेसबुक पर स्टोरी डालने या स्टेट्स पर फोटो डालने से होती है। सोशल मीडिया पर लोग अपना अनमोल समय इस कदर बर्बाद कर रहे हैं कि अपनों को देने के लिए समय नहीं। क्या बच्चे, क्या बूढ़े, मल्टीनेशनल कंपनियों से लेकर रेहड़ी चलाने वालों तक कोई इससे अछूता नहीं। आज-कल तो छोटे-छोटे बच्चे भी सोशल मीडिया से गलत-गलत चीजें सीख रहे हैं। नैतिक मूल्यों का पतन दिन-प्रतिदिन प्रगति पर है। हमें यह गलत होने से पहले ही इसे रोकना होगा अन्यथा ये यूँही गलत मार्ग पर चलते रहेंगे। बच्चों का मन गलत मार्ग पर जल्दी आकर्षित होता है क्योंकि सच्चाई का मार्ग बहुत दुर्लभ होता है। जिस पर सभी नहीं चल पाते है। अतः हमें ही सोशल मीडिया के प्रति लोगों को जागरूक करना पड़ेगा। क्योंकि अब वह सुसमय आ चुका है कि अब हम देश का भविष्य उज्जवल कर सकें । तो उठें, जागें और कहें सोशल मीडिया से जुड़िए पर उसमें खो मत जाइए।